Impact Factor (SJIF): 6.092 E-ISSN: 2583-1615

International Journal of Research in Academic World

Received: 17/November/2024 IJRAW: 2024; 3(12):157-158 Accepted: 26/December/2024

महर्षि दयानंद सरस्वती का स्त्री शिक्षा विषयक विचार एवं योगदान: एक विस्तृत विश्लेषण

*[1]कविता वर्मा

*[1]सहायक आचार्य, इतिहास विभाग, महारानी श्री जया महाविद्यालय, भरतपुर, राजस्थान, भारत।

सारांश

महर्षि दयानन्द सरस्वती का स्त्री शिक्षा के क्षेत्र में योगदान अत्यन्त महत्वपूर्ण और अद्वितीय था। आर्य समाज ने 19वीं शताब्दी के अन्त में स्त्री शिक्षा के प्रसार की दिशा में अनूठा कार्य किया। इस समय भारतीय समाज में स्त्री शिक्षा को लेकर अंधविश्वास और पुरानी परंपराएँ प्रबल थीं, और अधिकांश लोग यह मानते थे कि स्त्रियों को शिक्षा देना उनके चरित्र को भ्रष्ट कर देगा। इस माहौल में आर्य समाज ने कन्याओं के लिए शिक्षा के रास्ते खोलने का साहसिक कार्य प्रारम्भ किया। लाला देवराज जैसे समर्पित कार्यकर्ताओं ने जालन्धर में कन्या महाविद्यालय की स्थापना के लिए कई विफल प्रयासों के बाद सफलता हासिल की। आर्य समाज ने भारतभर में कन्या विद्यालय, महाविद्यालय और गुरुकुलों की स्थापना की, जहां लाखों कन्याओं ने शिक्षा प्राप्त की।

समय के साथ-साथ सरकार ने भी स्त्री शिक्षा के प्रसार के लिए कई कदम उठाए, लेकिन आर्य समाज का यह योगदान सर्वथा अनूठा था, जो समाज में स्त्रियों के प्रति दृष्टिकोण को बदलने में सहायक सिद्ध हुआ।

मुख्य शब्द: पुनर्जागरण, स्वावलम्बन, सशक्तिकरण, रूढ़िवादी, तर्कसंगत।

प्रस्तावना

महर्षि दयानंद सरस्वती और उनके द्वारा स्थापित आर्य समाज ने 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में भारतीय समाज में क्रांति का सूत्रपात किया। इस क्रांति का एक महत्वपूर्ण पक्ष था स्त्री शिक्षा। उस समय जब भारतीय समाज में स्त्रियों को शिक्षा से वंचित रखा जाता था, महर्षि ने स्त्री शिक्षा को सामाजिक सुधार का एक केंद्रीय तत्व बनाया। उनके विचार और उनके द्वारा किए गए प्रयास न केवल उस समय के लिए प्रासंगिक थे, बल्कि आज भी सामाजिक और शैक्षणिक दृष्टिकोण से प्रेरणादायक हैं।

1. समकालीन सामाजिक परिस्थितियाँ और चुनौतियाँ

19वीं शताब्दी में भारतीय समाज परंपरागत रूढ़ियों और अंधविश्वासों के शिकंजे में जकड़ा हुआ था। स्त्रियों की स्थिति अत्यंत दयनीय थी। उनके जीवन में शिक्षा का कोई स्थान नहीं था, और वे कई सामाजिक कुरीतियों का शिकार थीं।

(क) बाल विवाह: लड़कियों को कम उम्र में ही विवाह के बंधन में बाँध दिया जाता था। इस प्रथा ने न केवल उनकी शिक्षा को बाधित किया, बल्कि उनके मानसिक और शारीरिक विकास पर भी प्रतिकूल प्रभाव डाला।

(ख) विधवा जीवन: अशिक्षा के कारण विधवाएँ आत्मनिर्भर नहीं हो पाती थीं और उन्हें समाज में तिरस्कार झेलना पड़ता था। उनके पुनर्विवाह की अनुमति भी नहीं थी।

(ग) अशिक्षा: सामाजिक मान्यता थी कि शिक्षा महिलाओं को विद्रोही बना देगी और उनके नैतिक मूल्यों को हानि पहुँचेगी।

(घ) पर्दा प्रथा और दहेज प्रथा: इन कुरीतियों ने महिलाओं को सामाजिक स्वतंत्रता और शिक्षा से वंचित कर दिया। पर्दा प्रथा ने उनकी सार्वजनिक भागीदारी को सीमित किया, और दहेज प्रथा ने उनके परिवारों पर आर्थिक बोझ बढ़ाया।

महर्षि दयानंद ने इन कुरीतियों को दूर करने और स्त्रियों को शिक्षित करने का बीड़ा उठाया। उनका मानना था कि शिक्षा ही समाज में व्याप्त इन समस्याओं का समाधान है।

2. महर्षि दयानंद सरस्वती का दृष्टिकोण

महर्षि दयानंद का स्त्री शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण वैदिक परंपराओं पर आधारित था। उनका विश्वास था कि प्राचीन वैदिक काल में स्त्रियाँ विद्या, कला, और समाज सेवा में समान रूप से भाग लेती थीं। उन्होंने स्त्रियों को शिक्षा का अधिकार दिलाने के लिए धार्मिक, सामाजिक, और तर्कसंगत आधार प्रस्तुत किए।

(क) वैदिक युग की पुनर्स्थापना: महर्षि दयानंद ने वेदों का गहन अध्ययन किया और निष्कर्ष निकाला कि वैदिक युग में स्त्रियाँ

*Corresponding Author: कविता वर्मा

शिक्षित और सम्मानित थीं। उन्होंने गार्गी, मैत्रेयी, और अपाला जैसी विदुषियों के उदाहरण देकर यह सिद्ध किया कि प्राचीन भारतीय समाज में स्त्रियाँ ज्ञान और शिक्षा में पुरुषों के समान थीं।

(ख) शिक्षा का उद्देश्य: महर्षि का मानना था कि शिक्षा का उद्देश्य स्त्रियों को आत्मनिर्भर और स्वाभिमानी बनाना है।

आत्मनिर्भरता: शिक्षा से महिलाएँ आर्थिक और सामाजिक रूप से स्वतंत्र बन सकती हैं। परिवार का सुदृढ़ आधार: एक शिक्षित महिला अपने परिवार को नैतिक और बौद्धिक दृष्टि से समृद्ध बना सकती है।

सामाजिक सुधार: शिक्षित महिलाएँ समाज से कुरीतियों को समाप्त करने में सहायक होती हैं।

(ग) वेदाध्ययन का अधिकार: महर्षिजी ने स्पष्ट किया कि वेदों की वाणी सभी के लिए समान है। उन्होंने वेदों के अनेक मंत्रों का उदाहरण देकर यह सिद्ध किया कि स्त्रियों को वेदाध्ययन का अधिकार है।

यजुर्वेद (26.2): यह मंत्र सभी को ज्ञान प्राप्त करने की प्रेरणा देता है।

अथर्ववेद (11.5.18): इसमें कन्याओं के ब्रह्मचर्य पालन और शिक्षा प्राप्ति का उल्लेख है।

3. आर्य समाज का योगदान

महर्षि दयानंद सरस्वती के नेतृत्व में आर्य समाज ने स्त्री शिक्षा के प्रसार को एक आंदोलन का रूप दिया। उन्होंने महिलाओं के लिए शिक्षा के अनेक संस्थानों की स्थापना की और समाज में जागरूकता फैलाई।

(क) शैक्षणिक संस्थानों की स्थापना: आर्य समाज ने उत्तर भारत में कई कन्या गुरुकुल और पाठशालाएँ स्थापित कीं। इनमें भारतीय परंपराओं और आधुनिक शिक्षा के समन्वय से पाठ्यक्रम तैयार किया गया। जालंधर का कन्या महाविद्यालय: समाज के विरोध और कठिनाइयों के बावजूद लाला देवराज के नेतृत्व में यह विद्यालय स्थापित किया गया। यह भारतीय संस्कृति और स्त्री शिक्षा का प्रमुख केंद्र बना।

कन्या गुरुकुल: हरिद्वार और अन्य स्थानों पर आर्य समाज ने कन्या गुरुकुलों की स्थापना की, जहाँ वैदिक और आधुनिक शिक्षा प्रदान की जाती थी।

(ख) महिला शिक्षकों का प्रशिक्षण: आर्य समाज ने शिक्षिका बनने के इच्छुक महिलाओं को विशेष प्रशिक्षण प्रदान किया। इससे महिलाओं को आत्मनिर्भर बनने और अन्य महिलाओं को शिक्षित करने का अवसर मिला।

(ग) सामाजिक जागरूकता अभियान: समाज ने न केवल शैक्षणिक संस्थानों की स्थापना की, बल्कि समाज में महिलाओं की शिक्षा के महत्व पर जागरूकता फैलाने के लिए प्रचार-प्रसार भी किया। उन्होंने धार्मिक ग्रंथों और तर्कसंगत उदाहरणों से यह समझाया कि स्त्री शिक्षा समाज के लिए क्यों आवश्यक है।

4. समकालीन परिप्रेक्ष्य में महर्षि दयानंद के विचार

आज के युग में स्त्री शिक्षा को लेकर समाज में सकारात्मक बदलाव आया है। महर्षि दयानंद सरस्वती के विचार आज भी प्रासंगिक हैं।

(क) बाल विवाह और शिक्षा: बाल विवाह आज भी भारत के कुछ हिस्सों में प्रचलित है। यूनिसेफ की रिपोर्ट के अनुसार, बाल विवाह की घटनाओं में कमी आई है, लेकिन यह समस्या पूरी तरह समाप्त नहीं हुई है। महर्षि के अनुसार, शिक्षा ही इस समस्या का स्थायी समाधान है।

(ख) महिला सशक्तिकरण: महिला सशक्तिकरण की दिशा में सरकार द्वारा कई योजनाएँ चलाई जा रही हैं, जैसे:

बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ: यह योजना महिलाओं की शिक्षा और सशक्तिकरण को बढ़ावा देती है।

प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना: महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए यह योजना प्रेरित करती है।

(ग) आर्थिक स्वतंत्रता: शिक्षित महिलाएँ आज विभिन्न क्षेत्रों में आत्मनिर्भरता की मिसाल प्रस्तुत कर रही हैं। वे न केवल अपने परिवार को सहारा दे रही हैं, बल्कि समाज में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं।

5. महर्षि दयानंद की आलोचना और उनकी विचारधारा की विशिष्टता

महर्षि दयानंद के स्त्री शिक्षा संबंधी विचारों को समाज के रूढ़िवादी वर्ग से आलोचना का सामना करना पड़ा। उनके विचारों और प्रयासों की आलोचना निम्नलिखित रूप में देखी गई:

(क) रूढ़िवादी वर्ग की प्रतिक्रिया: समाज के पारंपरिक वर्ग ने महर्षि के प्रयासों को यह कहकर खारिज किया कि स्त्रियों को शिक्षा देने से वे परंपराओं के खिलाफ हो जाएँगी।

(ख) धार्मिक विरोध: कुछ धार्मिक विचारधाराओं ने स्त्रियों को शिक्षा का अधिकार देने के उनके विचारों को वेद-विरोधी बताया। वे मानते थे कि शिक्षा का अधिकार केवल पुरुषों तक सीमित है।

(ग) सामाजिक प्रतिरोध: महर्षि के स्त्री शिक्षा प्रयासों का प्रारंभ में विरोध किया गया, विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में। लेकिन उनकी दूरदर्शिता और सतत प्रयासों से धीरे-धीरे यह विरोध कम हुआ।

(घ) विशिष्टता: महर्षि दयानंद की विचारधारा की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि वे केवल साक्षरता पर नहीं, बल्कि संपूर्ण स्त्री सशक्तिकरण पर जोर देते थे। उन्होंने महिलाओं को आत्मनिर्भर और समाज में प्रभावशाली भूमिका निभाने के लिए प्रेरित किया।

6. विशेष उपलब्धियाँ

(क) समाज में जागरूकता: महर्षि और आर्य समाज के प्रयासों से समाज में स्त्री शिक्षा को लेकर जागरूकता बढ़ी। लोगों ने यह समझा कि महिलाओं की शिक्षा न केवल उनके जीवन को बेहतर बनाती है, बल्कि पूरे समाज को प्रगति की ओर ले जाती है।

(ख) प्रेरणा स्रोत: आर्य समाज के प्रयास आज के सामाजिक संगठनों और शैक्षणिक संस्थानों के लिए प्रेरणा का स्रोत हैं। उनकी सोच ने महिला सशक्तिकरण के आंदोलन को आधार प्रदान किया।

7. निष्कर्ष

महर्षि दयानंद सरस्वती ने स्त्री शिक्षा के क्षेत्र में जो योगदान दिया, वह भारतीय समाज के पुनर्निर्माण की दिशा में एक ऐतिहासिक कदम था। उनके विचार केवल उनके समय तक सीमित नहीं थे, बल्कि आज भी समाज को दिशा देने में सक्षम हैं। उन्होंने यह सिद्ध किया कि शिक्षा के माध्यम से न केवल स्त्रियाँ, बल्कि समाज और राष्ट्र भी प्रगति के पथ पर अग्रसर हो सकता है।

महर्षि के विचार हमें यह सिखाते हैं कि स्त्रियों की शिक्षा और सशक्तिकरण से ही एक समृद्ध और समान समाज का निर्माण संभव है। उनकी सोच और उनके प्रयास हमें प्रेरित करते हैं कि हम अपने समाज में शिक्षा और समानता के विचार को और सुदृढ़ करें।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. कैलाश सत्यार्थी, वर्तमान सन्दर्भ और आर्य समाज
2. डॉ. सत्यकेतुविद्यालंकार, प्राचीन भारत का सामाजिक सांस्कृतिक इतिहास
3. डॉ. सत्यकेतुविद्यालंकार, आर्य समाज का इतिहास
4. विजय लक्ष्मी, महर्षि दयानंद केई राष्ट्र को देन
5. मंजू मिश्रा, भारतीय सामाजिक व्यवस्था।